Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

Original Article

शिक्षा एवं संस्कृति पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का प्रभाव

डॉ.राज कुमार
समाजशास्त्र विभाग, एम. एम. एच. कॉलेज, गाजियाबाद (उ.प्र.)
Email: rajkumar.ofm89@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180110
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 1(A)
Pp. 45-51
January - 2026
Submitted: 15 Dec. 2025
Revised: 25 Dec. 2025
Accepted: 10 Jan. 2026
Published: 31 Jan. 2026

सारांश

*प्रस्तुत शोध–पत्र में शोधक व शोधार्थी ने भारतीय शिक्षा और संस्कृति के आपसी सम्बन्धों पर पड़ने वाले 'एआई' के प्रभावों को अन्वेषित किया गया है। संस्कृति प्रत्येक देश और समाज की पहचान होती है। संस्कृति में किसी समुदाय और समाज के रिति–रिवाज, रहन–सहन, खान–पान की विधियाँ, प्रतिमानो, भाषा–साहित्य, कला–कौशल, नृत्य–संगीत, धर्म–दर्शन, विश्वास, व्यवहारों और मूल्यों को सम्मलित किया जाता है। शिक्षा एवं संस्कृति एक–दूसरे के पूरक होते हैं। जिसके फलस्वरूप किसी भी राष्ट्र की शिक्षा पर उसकी संस्कृति और संस्कृति पर उस राष्ट्र की शिक्षा का भी व्यापक प्रभाव पड़ता है। किसी भी राष्ट्र के विधालयों और विश्वविद्यालयों का यह उत्तरदायित्व होता है कि वे अपने देश की संस्कृति को संझोकर रखने के साथ–साथ अपनी भावी पीढ़ियों को हस्तांतरित करने के लिए उत्तरदायित्व का निर्वाहन करें। यह कार्य शिक्षा द्वारा तब ही सम्पूर्ण किया जा सकता है, जब शिक्षा के औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक अभिकरणों के सदस्य अपनी संस्कृति से पूर्णतया अवगत हो। प्रस्तुत शोध–पत्र में भारतीय शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न पहलूओं जैसे–विद्यालय, पाठ्यक्रम, कक्षा–कक्ष, शैक्षिक उद्देश्य, शिक्षण विधियाँ, अनुशासन व्यवस्था, शिक्षक तथा शिक्षार्थी की स्थिति, ज्ञान, मूल्यांकन एवं संस्कृति के आपसी गुम्फित अन्तर्सम्बन्धों को जानने एवं शिक्षा एवं संस्कृति क्षेत्र के चहरे को व्यापक रूप से बदलने की क्षमता के साथ सम्पूर्ण विश्व में एक ओर तकनीकी तेजी से बढ़ रही है। जिसे हम **'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)'** के रूप में जानते हैं। इसने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सारी सम्भावनाएँ पैदा की है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के रूप में जानते है। इसने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सारी सम्भावनाएँ पैदा की है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) में आज शिक्षा में कुछ बड़ी चुनौतियों का समाधान करने, शिक्षण और सीखने और सांस्कृतिक क्षेत्र की परम्पराओं, रिति–रिवाजों और प्रथाओं को नये रूप देने की क्षमता है। हालांकि ये तेजी से तकनीकी विकास अनिवार्य रूप से अनेक जोखिम और चुनौतियाँ भी लाते हैं।*

मुख्य शब्द: *शिक्षा, संस्कृति, कृतिम बुद्धिमता, तकनीकी, कम्प्यूटर–मशीन, लर्निंग टीचर बॉटस।*

प्रस्तावना

वर्तमान समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस लगभग 40 प्रतिशत युवाओं की नौकरियों को प्रभावित करेगी। कुछ को स्थापित करेगी और कुछ को पूरक बनाऐगी। इसकी क्षमता का दोहन करने के लिए हमें नीतियों में सावधानी पूर्वक संतुलन बनाने की आवश्यकता है। विरन हम सब एक ऐसी तकनीकी क्रान्ति के कगार पर खड़े हैं, जो उत्पादकता को बढ़ावा दे सकती है, जिससे विश्व भर में आय और वैश्विक विकास को बढ़ावा दे सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की तीव्र प्रगति ने विश्व भर को सम्मोहित कर दिया है, जिससे उद्यमियों में उत्साह और चिंताएँ दोनों पैदा हो रही हैं और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसके संभावित प्रभाव के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न उठ रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के गम्भीर परिणामों से विश्व भर की अर्थव्यवस्थाओं में हलचल मच गई है। हम कुछ हद तक विश्वास के साथ कह सकते हैं कि हमें मानवता के लाभ के लिए (एआई) की विशाल क्षमता का सुरक्षित रूप से लाभ लेने के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक नीतियों के साथ आगे आने की आवश्यकता है। इस समय हम ऐसे मुकाम पर पहुँच गए हैं, जहाँ तकनीकी विशेषज्ञों को यह विश्वास हो चला है कि निकट भविष्य में मानव मस्तिष्क के सारे क्रिया–कलापों को मशीनें धारण कर लेंगी।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ.राज कुमार, समाजशास्त्र विभाग, एम. एम. एच. कॉलेज, गाजियाबाद (उ.प्र.)

How to cite this article:
कुमार, . राज . (2026). शिक्षा एवं संस्कृति पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का प्रभाव. Journal of Research & Development, 18(1(A)), 45–51. https://doi.org/10.5281/zenodo.18604698

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18604698
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

इस विधा को 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' अर्थात् आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) कहा जाता है। इसके बारे में सबसे पहले कम्प्यूटर वैज्ञानिक जॉन मैकार्थी ने बताया था, इसीलिए उन्हें इस विधा एवं तकनीकी का प्रतिपादक कहा जा सकता है। 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' का प्रारम्भ 1950 के दशक से माना जाता है। इसमें कम्प्यूटर और कम्प्यूटर प्रोग्रामों को उन्हीं तरीकों के आधार पर चलाने का प्रयास किया जाता है, जिस प्रकार मानव मस्तिष्क चलाता है। इसका एक अनोखा उदाहरण हमें देखने को मिला है कि शतरंज खेलने वाला कम्प्यूटर, यह कम्प्यूटर मानव मस्तिष्क की लगभग प्रत्येक चाल की काट और अपनी चाल सोचने के लिए तैयार रहता है परन्तु इतना सफल रहा कि मई 1997 में (आई0बी0एम0) का कम्प्यूटर 'डीप ब्लू' विश्व चैंपियन शतरंज खिलाड़ी ''गैरी कास्पोरोव'' को पराजित कर चुका है। इसीलिए कहा जाता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के आ जाने से सबसे ज्यादा नुकसान मानव को ही होगा क्योंकि फिर किसी को इंसानों की जरूरत नहीं होगी अर्थात् 'मशीने' स्वयं ही निर्णय लेने लगेगी।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अर्थ– एआई का शाब्दिक अर्थ है कि 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' यह एक तरह का सिस्टम विकसित करना है। जो कृत्रिम रूप से सोचने, समझने और सीखने की क्षमता रखता हो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का सामान्य–अर्थ कृत्रिम तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता है। विज्ञान की प्रगति के साथ–साथ प्रत्येक चीजों को कृत्रिम तौर पर बनाने के प्रयास हो रहे हैं। इस प्रगति में मानव ने बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में भी अपने अनुभव और आकांक्षाओं से कृत्रिम बुद्धिमत्ता को विकसित करने का प्रयास किया है। वैज्ञानिकों द्वारा ऐसे कम्प्यूटरों का आविष्कार किया गया है जिसके द्वारा जटिल से जटिल कार्यों को अल्प समय में करने की क्षमता होती है। गौरतलब है कि 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' एक रूप में सीमित है। क्योंकि इसमें मशीनी सामर्थ्य इसकी प्रोग्रामिंग पर आश्रित है। जबकि मानवीय मस्तिष्क में ऐसी कोई सीमा निश्चित नहीं है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रमुख अनुप्रयोग– आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रतिपादक 'जॉन मैकार्थी' के अनुसार–''यह (एआई) मशीन बनाने की विज्ञान और इंजीनियरिंग है। विशेष रूप से बुद्धिमान कम्प्यूटर प्रोग्राम बनाने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ऐसे कम्प्यूटर, कम्प्यूटर कंट्रोल रोबोट एवं सॉफ्टवेयर बनाने की एक विधि है। जो समझदारी से सोच–विचार कर सकते है, जिस प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति सोचते हैं। मानव मस्तिष्क कैसे सोचते हैं और वे कैसे कार्य करते हैं। इस प्रकार की बातों को सीखकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस निपुण होती है। इस शब्द को अक्सर मनुष्य की बौद्धिक प्रक्रियाओं के साथ पूर्ण होने वाली डेवलपिंग सिस्टम के लिए उपयोग किया जाता है। जो मानव की विशेषताओं का मसलन विचार करने की क्षमता, अर्थ की खोज और बीते अनुभवों से सीाखने आदि से जुड़ी है। इस वक्त आर्टिफिशियल व एआई तकनीकी के विकास की बात करें तो मशीनी दिमाग के लिए कविताएं लिखना, शतरंज खेलना, भीड़–भाड़ वाली सड़कों पर गाड़ी ड्राइविंग करना, गणितीय प्रमेयों को सरल करना आदि बेहद आसान हो गया है। इस समय 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावशाली भूमिका निभा रहा है, जैसे–

(क) स्वाभाविक भाषा प्रसंस्करण– आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीकी द्वारा कम्प्यूटर के साथ बातचीत करना संभव है, जो मानव द्वारा बोली जाने वाली स्वाभाविक भाषा समझता है।

(ख) हस्तलिपि पहचान– आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीकी की सहायता से विकसित हस्तलेख पहचान सॉफ्टवेयर द्वारा कलम से कागज पर लिखे या स्टाईल्स द्वारा स्क्रीन पर लिखे शब्द पढ़ सकते हैं। ये सॉफ्टवेयर अक्षरों की आकृति को पहचान कर उन्हें संपादन योग्य टैक्स्ट में रूपांतरित कर सकते हैं।

(ग) कम्प्यूटर गेम्स– एआई, तकनीकी रणनीति बनाने वाले खेलो में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जैसे कि टिक–टैक–टौ, पोकर व शतरंज आदि। जहाँ पर मशीन अनेक संभावित स्थितियों के बारे में अनुमान लगा सकती है।

(घ) वाक् पहचान– आर्टिफिशियल तकनीकी द्वारा विकसित कुछ बुद्धिमान प्रणालियां, सुनने और भाषा को वाक्यों और उसके अर्थ को समझने में सक्षम है। खास करके उस वक्त जब मानव उससे बातचीत (संवाद) कर रहा होता है। वह भिन्न–भिन्न खिचड़ी शब्दों व सर्दी के कारण लोगों की आवाज में बदलाव, लहजों और पृष्ठभूमि की ध्वनि आदि को समझ लेती है।

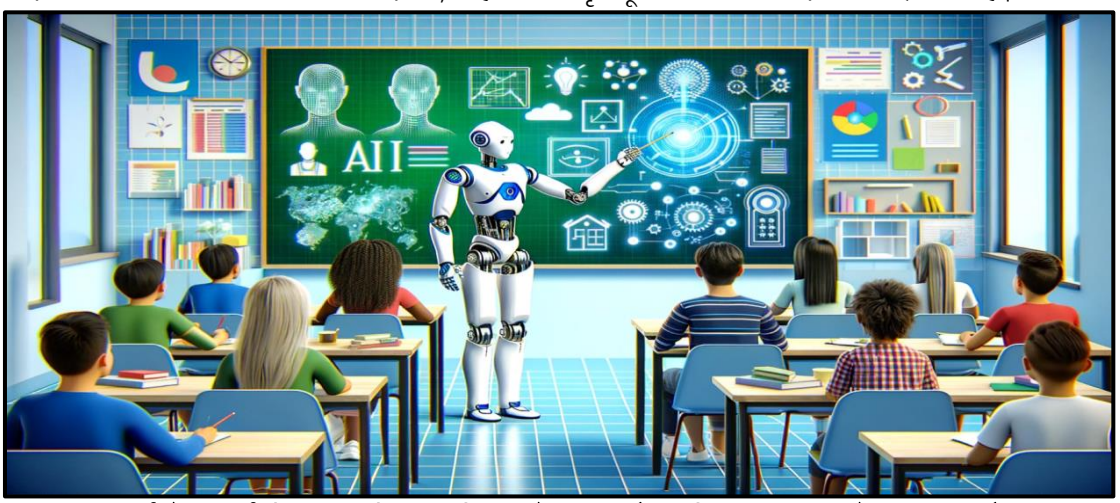

एआई मे सम्पूर्ण शिक्षा एवं शिक्षण प्रकिया को सरल और अधिक कुशल बनाने की क्षमता है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रकार– आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं–
(क) पूर्णतः प्रतिक्रियात्मक (प्योरलीरिरगकिटव)
(ख)सीमित स्मृति (लिमिटेड मेमोरी)
(ग) मस्तिष्क सिद्धांत (ब्रेन थ्योरी)
(घ)आत्म चेतन (सेल्फ कॉन्ससियस)

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने वर्तमान समय में विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ–साथ मानव जीवन के लगभग सम्पूर्ण क्षेत्र में हलचल मचा दी है। इसके प्रभावों से– कृषि, बैंकिंग, वित्त संस्थाएं, विनिर्माण विपरण, पर्यावरण प्रबन्ध, मानव संस्थान, फाइनेंस बिजनेस, स्मार्ट सिटी, मनोरंजन, गेमिंग, साइबर सुरक्षा, परिवहन, कानून और स्वास्थ्य सेवाएं इत्यादि में एआई का सबसे अच्छा और आशाजनक अनुप्रयोग किया जा रहा है। एआई संचालित सिस्टम हमारे चिकित्सा क्षेत्र में बिमारियों का पता लगाने, दवाईयों की खोज, उपचार–निदान और रोगी की देखभाल के दृष्टिकोण में क्रान्तिकारी परिवर्तन आ रहे हैं। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम, एक्स–रे, स्कैन, एमआरआई जैसी चिकित्सा डेटा का विश्लेषण करके एआई एल्गोरिदम पैटर्न विभिन्न विसंगतियों का पता लगा सकते हैं। तमाम प्रगतियों के बावजूद एआई सिस्टम पर विचार करते समय गोपनीयता पूर्वाग्रह और एल्गोरिदम जवाब देही के बारे में प्रमुख नैतिक चिंताएं बनी हुई हैं। एआई ने स्वास्थ्य सेवा की भाति शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र को भी अपने प्रभावों से अछूता नहीं छोड़ा है। भारतीय शिक्षा और संस्कृति किस प्रकार इसके गम्भीर प्रभावों से प्रभावित हो रही है। उस पर दृष्टि डालते हुए जैसा कि शिक्षा और संस्कृति एक–दूसरे के पर्याय हैं। संस्कृति का कार्य है–संस्करण अर्थात् परिष्कार करना, यही कार्य शिक्षा भी करती है। समाज की संरचना में भी संस्कृति का विशेष महत्व रहता है। किसी भी सामाजिक संरचना को समझने के लिए संस्कृति एक आवश्यक तत्व है। संस्कृति समाज को संगठित रखती है। जीवन शैली के स्वरूप को प्रस्तुत करने का कार्य भी संस्कृति करती है।

शिक्षा एवं संस्कृति का अर्थ एवं परिभाषाएं

शिक्षा और संस्कृति परस्पर घनिष्ट रूप से सम्बन्धित है। शिक्षा अपनी रूपरेखा का निर्माण समाज की संस्कृति के अनुसार ही करती है और संस्कृति का निर्माण समाज के उपकरणों, मूल्यों और विचारों के आधार पर ही होता है। यदि किसी समाज की संस्कृति में आध्यात्मिकता का प्रमुख स्थान है, तो वहाँ की शिक्षा व्यवस्था में नैतिकता चारित्रिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर विशेष बल दिया जाता है। इसके साथ–साथ किसी समाज की संस्कृति का संरक्षण समाज के माध्यम से ही होता है। इस प्रकार संस्कृति शिक्षा को और शिक्षा संस्कृति को प्रभावित करती है।

प्रो.ब्रामेल्ड के मतानुसार– ''संस्कृति की सामग्री से ही शिक्षा का प्रत्यक्ष रूप से निर्माण होता है और यही सामग्री शिक्षा को न केवल उसके स्वयं के उपकरण वरन उसके अस्तित्व का कारण भी प्रदान करती है।''

भारतीय शिक्षा और संस्कृति का सम्बन्ध

प्रत्येक देश की शिक्षा व्यवस्था उस देश के स्वरूप सामाजिक नियमों, सामाजिक मूल्यों, शासन तंत्र, नीतियां, अर्थव्यवस्था, मनोवैज्ञानिक खोजों और वैज्ञानिक आविष्कारों का अनुसरण करते हुए पुष्पित और पल्लवित होती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली के विभिन्न पक्षों एवं संस्कृति के अन्तर्सम्बन्धों की विस्तृत विवेचनाएं निम्नलिखित है–

1. भारतीय शिक्षा की पाठ्यचर्या और संस्कृति का सम्बन्ध।
2. भारतीय शिक्षा में अनुशासन एवं संस्कृति का सम्बन्ध।
3. भारतीय शिक्षा के उद्देश्य एवं संस्कृति का सम्बन्ध।
4. भारतीय शिक्षा में अध्यापकों एवं शिक्षार्थी की स्थिति और संस्कृति का सम्बन्ध।
5. भारतीय शिक्षा की शिक्षण विधियाँ एवं संस्कृति का सम्बन्ध।
6. भारतीय शिक्षा में विद्यालय और संस्कृति का सम्बन्ध।

1. भारतीय शिक्षा की पाठ्यचर्या और संस्कृति का सम्बन्ध– प्रत्येक समाज की संस्कृति और वहाँ की शिक्षा के उद्देश्यों में अन्तर्सम्बन्ध परिलक्षित होते हैं। जिसके कारण शिक्षा के उद्देश्यों के प्रमाणित एवं परिवर्तित होने से शिक्षा की पाठ्यचर्या भी प्रभावित होती है। अभौतिक संस्कृति वाले समाज में अलौकिक विषय के साथ–साथ नैतिक, धार्मिक, दार्शनिक, कलात्मक तथा साहित्य के विषयों को अधिक महत्व दिया जाता है। जबकि भौतिकवादी संस्कृति वाले समाज में भौतिकता को ध्यान में रखते हुए विज्ञान, तकनीकी अभियंत्रिकी, व्यापार, बैंकिंग और प्रबन्धन आदि विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाता है। शिक्षा में पाठ्यचर्या वह साधन है जिसके द्वारा शिक्षा तथा जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति की जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में छात्रों के लिए व्यवसायपरक पाठ्यक्रम लागू करने की सिफारिश की है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थियों के विकास की अलग–अलग अवस्थाओं के अनुसार 5+3+3+4 पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। नागरिकों में कौशल विकास सम्बन्धी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पाठ्यक्रम में कृषि, तकनीकी शिक्षा अभियंत्रिकी, चिकित्सा और कम्पयूटर शिक्षा से सम्बन्धित विषयों को पाठ्यचर्या में महत्वपूर्ण स्थान दिया जा रहा है। जिससे मानवीय संसाधनों को विकसित करके राष्ट्र का सर्वांगीण विकास किया जा सके।

2. भारतीय शिक्षा में अनुशासन एवं संस्कृति का सम्बन्ध– हर समुदाय एवं समाज की संस्कृति के अनुरूप शैक्षिक व्यवस्था का नियोजन एवं संचालन किया जाता है और इसी संस्कृति के अनुरूप ही शिक्षा में अनुशासन का प्रावधान किया जाता है। जिस समाज की संस्कृति में दमनात्मक अनुशासन को स्वीकार किया जाता है। वहाँ की शिक्षण अधिगम परिप्रेक्ष्य में भी विद्यार्थियों के

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

लिए दमनात्मक अनुशासन को ही स्वीकार किया जाता है। भारतीय शिक्षा में छात्र–छात्राओं की स्वतंत्रता एवं उनकी व्यक्तिगत विभिन्नताओं को प्रमुख स्थान दिया जाता है। शिक्षा प्रणाली में मुक्तयात्मक एवं प्रभावात्मक अनुशासन को स्वीकार किया जाता है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में भी छात्र एवं छात्राओं के लिए किसी भी प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक दण्ड को निषिद्ध किया गया है। जिसके फलस्वरूप वर्तमान शिक्षा में दमनात्मक अनुशासन की जगह मुक्तयात्मक, सामाजिक और प्रभावात्मक अनुशासन को अपनाने पर जोर दिया जाता है।

3. भारतीय शिक्षा के उद्देश्य एवं संस्कृति का सम्बन्ध– शिक्षा व्यवस्था द्वारा जीवन के भौतिक उद्देश्यों की प्राप्ति पर बल दिया जाता है और जिस समाज में अभौतिक संस्कृति को प्रमुखता दी जाती है। संस्कृति एक बहुत व्यापक संप्रत्यय है, इसका सम्बन्ध उन कार्यों, उपकरणों और विचारों से होता है। जिसे एक समाज के सदस्य अपनी सम्बन्धित परम्परा के अनुसार सीखते हैं। दूसरों के साथ हिस्सा बाटते हैं और उनका मूल्यांकन करते हैं। वहां शिक्षा द्वारा नागरिकों में सहयोग, करूणा, दया, प्रेम, त्याग, परोपकार, समर्पण और नैतिकता जैसे आदर्शवादी मानवीय गुणों को विकसित करने पर बल दिया जाता है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में भौतिक और अभौतिक दोनों प्रकार के सांस्कृतिक उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है। परिणाम–स्वरूप इसका मिला–जुला रूप शिक्षा पर देखने को मिलता है।

4. भारतीय शिक्षा में अध्यापक एवं शिक्षार्थी की स्थिति और संस्कृति का सम्बन्ध– शिक्षक समाज, राष्ट्र का निर्माता होता है। जिसके परिणाम–स्वरूप यह किसी भी समाज की संस्कृति पर अमिट छाप छोड़ता है। शिक्षक, छात्र–छात्राओं को समकालीन विचारों एवं नूतन शिक्षण विधियों और प्रविधियों के माध्यम से समाज की वैविध्यता पूर्ण संस्कृति से परिचित करवाता है। साथ ही विद्यार्थी भी शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत समाज की संस्कृति में प्रगतिशील परिवर्तन, संशोधन एवं परिवर्धन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों संस्कृति को प्रभावित करते हैं। वर्तमान भारतीय समाज में शिक्षक और विद्यार्थी के सम्बन्धों में खुलापन, आत्मीयता, मधुरता और अपनापन देखने का मिलता है। जोकि भारतीय शिक्षा में शिक्षक और विद्यार्थी की स्थिति एवं संस्कृति के मधुर अन्तर्संबंधों को परिलक्षित करते हैं।

5. भारतीय शिक्षा की शिक्षण विधियाँ एवं संस्कृति का सम्बन्ध– भारतीय शिक्षा व्यवस्था में नवाचारी शिक्षण विधियों जैसे– परियोजना विधि, समूह चर्चा विधि, मानव मंथन विधि, निर्माणवादी शिक्षण उपागम, अधिगम प्रबंधन प्रणाली, अभिनयीकरण विधि, परियोजना विधि, खोज विधि, निरीक्षण अध्ययन विधि और आई0सी0टी0 आधारित शिक्षण विधियाँ, मिश्रित शिक्षण अधिगम विधियाँ भ्रमण विधि जैसी बाल केन्द्रित शिक्षण विधियों का उपयोग किया जा रहा है, जिनकी सहायता से सीखना, रूचि कर और प्रभावी हो जाता है। किसी भी समाज की संस्कृति की संस्कृति में निरन्तर परिवर्तन एवं परिमार्जन होता रहता है, इसके अतिरिक्त वैश्वीकरण तथा मुक्त बाजार के इस दौर ने विभिन्न राष्ट्रों की संस्कृति को आपस में मिलाने का काम किया है। जिस देश की संस्कृतियों के अनुरूप में जिन शिक्षण विधियों का विकास हुआ है, वहाँ की शिक्षा व्यवस्था में भी सर्वाधिक प्रयोग इन्हीं शिक्षण–अधिगम विधियों का किया जाता है। प्राचीन समय में शिक्षण कार्य मौखिक एवं कक्षा नेतृत्व प्रणाली के अनुरूप से होता था। इसीलिए उस समय शिक्षण विधियों में अनुकरण, पुनरावृत्ति और कंठस्थ करने जैसी गतिविधियों पर जोर दिया जाता था। इसके प्रश्नोत्तर, व्याख्यान, शंका–समाधान, अनुकरण आदि विधियों का भी उपयोग शिक्षण–अधिगम की प्रक्रियाओं को सुचारू रूप से चलाने के लिए किया जाता था।

6. भारतीय शिक्षा में विद्यालय और संस्कृति का सम्बन्ध– भारत के भविष्य का निर्माण विद्यालय की कक्षाओं में हो रहा है। इस कथन से स्पष्ट होता है कि विद्यालय वास्तव में वे सामाजिक संस्थाएं है जिन पर सम्बन्धित समाज और उसकी संस्कृति का प्रभावी और सार्थक प्रभाव पड़ता है। विद्यालय के भवन प्रयोगशालाएं, मैदान और सभागार सम्बन्धित समाज की संस्कृति के विभिन्न घटको के अनुरूप निर्मित किए जाते हैं और इन संस्थानों के शिक्षक और विद्यार्थी समाज की संस्कृति के अनुसार व्यवहार करते हैं। शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में जीवन कौशलों के विकास को भी प्रमुखता दी गई है। जिनमें ऑनलाईन और डिजिटल शिक्षा, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आभासी प्रयोगशालाएं, डिजिटल रिपोजिटरी, मिश्रित अधिगम, प्रतिमान जैसे तकनीकी नवाचारों की अनुशंसा कर विद्यालयी और विश्वविद्यालयी शिक्षा प्रणाली को एक विकासात्मक गति प्रदान की गई है।

शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभाव

शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रारम्भ के साथ छात्र एवं छात्राओं को सीखने में मदद करने के लिए इसका इस्तेमाल कई भिन्न–भिन्न विधियों से किया जा रहा है। यहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ कुछ प्रौद्योगिकियाँ दी गई है, जो पहले से ही शिक्षा क्षेत्र को प्रभावित कर रही है और हर तरह से प्रभावित करेगी–

1. व्यक्तिगत शिक्षा– आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टैक्नोलॉजी यह सुनिश्चित कर सकती है कि शिक्षा व्यक्तियों के लिए व्यक्तिगत हो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टैक्नोलॉजी न केवल प्रत्येक छात्र की जरूरतों को पूरा कर सकती हैं, बल्कि उन विशिष्ट विषयों को भी पूर्ण कर सकता है, जिन पर उन्हें जोर देना चाहिए। यह प्रत्येक छात्र के लिए एक अद्वितीय और अनुरूप सीखने का मार्ग तैयार करेगी।

2. शिक्षक प्रशिक्षण– सभी छात्र–छात्राओं को प्रभावी ढ़ंग से ज्ञान प्रदान करने में सक्षम होने के लिए शिक्षको को अपने कौशल को लगातार अपडेट करना चाहिए। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टैक्नोलॉजी शिक्षकों को उन चीजों पर खुद को अपडेट रखने की अनुमति देगा जो वह नहीं जानते थे। इसके साथ उनके पास नई पीढ़ी को सिखाने के लिए अधिक गहन और व्यापक ज्ञान का आधार होगा।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

3. स्वचालित कार्य– शैक्षिक प्रक्रिया में आज भी काफी हद तक काम मैनुअल तरीके से होता है। लेकिन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टैक्नोलॉजी की सहायता से ग्रेडिंग, एडमिशन प्रोसेस, मूल्यांकन, प्रगति रिपोर्ट और व्याख्यान के लिए संसाधनों का व्यवस्थित करने जैसे नियमित कार्य सरल हो जायेगे। छात्रों को कौशल विकसित करने में सहायता मिलेगी।

4. स्मार्ट कंटेंट– जब कोई शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका के बारे में सोचता है, तो स्मार्ट कंटेंट हमेशा दिमाग में आता है। स्मार्ट सामग्री वैयक्तिकृत होती है और जनसांख्यिकीय प्रासांगिक और व्यवहारिक डेटा के अनुसार गतिशील रूप से अपडेट हो सकती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हमारे दैनिक जीवन के साथ–साथ विभिन्न क्षेत्रों में एक बड़ा परिवर्तन ला रही है।

5. यूनिवर्सल एक्सेस– आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टैक्नोलॉजी स्मार्ट सामग्री बनाने में सहायता करेगी। इससे छात्र–छात्राओ को लाभ होगा, इसमें वे छात्र–छात्राएं भी शामिल हैं जो देख या सुन नहीं सकते। यह शिक्षक द्वारा कहीं गई प्रत्येक बात के लिए छात्रों को रीयल–टाइम उपशीर्षक प्रदान कर सकती है। एआई टैक्नोलॉजी उन बाधाओं को तोड़ सकती है, जो छात्रों को आगे बढ़ने से रोकती है।

6. तत्काल प्रतिक्रिया– एआई टैक्नोलॉजी न केवल अकादमिक शैक्षिक बोर्डों का एक पाठ्यक्रम तैयार करने में मदद कर सकती है, बल्कि यह पाठ्यक्रम की सफलता के बारे में तत्काल प्रतिक्रिया प्राप्त करने में भी मदद कर सकती है। विद्यालय विशेष रूप से ऑनलाईन निगरानी के लिए और विद्यार्थियों के प्रदर्शन के साथ कोई समस्या होने पर अध्यापकों को सतर्क करने के लिए एआई टैक्नोलॉजी सिस्टम का उपयोग किया जा सकता है।

7. 24/7 शिक्षार्थी सहायता और ट्यूशन– छात्र–छात्राएं अपने प्रश्नों को अपनी गति और शिक्षकों की प्रतीक्षा किए बिना हल कर सकते हैं। जबकि एआई टेक्नोलौजी ट्यूटर और चैटबॉट विद्यार्थियों को अपने कौशल को तेज करने और कक्षा के बाहर कमजोर स्थानों में सुधार करने में सहायता कर सकती है। एआई टैक्नोलॉजी की सहायता से शिक्षक अपने अनुभवों को अधिक प्रभावी ढ़ग से प्रदान कर सकते है।

संस्कृति में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रभाव– संस्कृति में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रमुख प्रभाव का विवरण निम्नलिखित है–

1. रचनात्मक अभिव्यक्ति पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभाव– संस्कृति में एआई के प्रभावों की सबसे उल्लेखनीय अभिव्यक्तियों में से एक है, रचनात्मक अभिव्यक्ति, एआई एल्गोरिदम अब कला संगीत, साहित्य और यहाँ तक की सम्पूर्ण फिल्में बनाने में सक्षम है। ज्यूकडेक और एम्पर म्यूजिक जैसे प्लेटफॉर्म मूल संगीत ट्रेक बनाने है। जबकि डीप ड्रीम थीम मंत्रमुग्ध करने वाली दृश्य कलाकृतियां बनाते हैं। ये एआई जनरेटेड रचनाएं लेखकत्व और रचनात्मकता की पारम्परिक धारणाओं को चुनौती देती है, जिससे मानव और मशीन जनरेटेड सामग्री के बीच की रेखाएं धुंधली हो जाती है। रचनात्मक क्षेत्र में एआई के आवागमन से कलात्मकता की प्रकृति और मानवीय रचनात्मता को दिए जाने वाले मूल्य का पुनर्मूल्यांकन करने की प्रेरणा मिलती है। जबकि कुछ लोग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा निर्मित सामग्री को लोकतांत्रिक शक्ति के रूप में देखते हैं। जो कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए सुलभ उपकरण प्रदान करती है। वही अन्य लोग मशीन द्वारा निर्मित कला का प्रमाणिकता और आत्मीयता के बारे में चिंता जताते है, फिर भी रचनात्मक प्रक्रिया में एआई का एकीकरण अन्वेषण और सहयोग के लिए नये रास्ते प्रदान करता है, जो विविध दृष्टिकोण के साथ सांस्कृतिक परिदृश्य को समृद्ध करता है।

2. लोकप्रिय संस्कृति में (एआई) और प्रतिनिधित्व– अपने रचनात्मक योगदान के समानांतर, लोकप्रिय संस्कृति के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का चित्रण प्रौद्योगिकी और पहचान के इर्द–गिर्द सामाजिक धारणाओं और पहचान मानदंडों को आकार देती है। विज्ञान कथाएँ लम्बे समय से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के निहितार्थों की खोज करने का एक मंच रही है। स्टार वार्स में R2 – D2 जैसे परोपकारी साथियों से लेकर टर्मिनेटर में स्काईनेट जैसे– डायस्टोपियन अधिपतियों तक ये कथाएँ व्यापक सामाजिक, चिंताओं और आकांक्षाओं को दर्शाती है। जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रौद्योगिकी के नैतिक और अस्तित्वगत निहितार्थो के बारे में चर्चाओं को बढ़ावा देती है।लोकप्रिय संस्कृति में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का चित्रण सांस्कृतिक मूल्यों, मानदंडो को भी दर्शाता है और उन्हें आकार देता है। उदाहरणार्थ– आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पात्रों में लिंग और नस्ल का प्रतिनिधित्व प्रचलित सामाजिक पूर्वाग्रहों और रूढ़ियों को दर्शाता है। इन मुद्दों को संबोधित करने के लिए मीडिया प्रतिनिधित्व के साथ महत्वपूर्ण जुड़ाव और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विकास और कहानी कहने में विविधता और समावेश को बढ़ावा देने के प्रयासों की आवश्यकता है।

3. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सांस्कृतिक पहचान– मीडिया में इसके चित्रण से परे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सांस्कृतिक पहचान के साथ भी जुड़ता है। यह आकार देता है कि हम खुद को और दूसरो को कैसे देखते हैं। भाषा, प्रसंस्करण और अनुवाद में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका भाषाई विविधता और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लिए निहितार्थ रखती है। जबकि (एआई) भाषाई बाधाओं के पार संचार की सुविधा प्रदान करता है। यह भाषाई बारीकियों और सांस्कृतिक संदर्भ को सुरक्षित करने में चुनौतियां भी पेश करती है। सांस्कृतिक पहचान पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभाव विरासत संरक्षण और ऐतिहासिक व्याख्या के प्रश्नों तक फैला हुआ है। चहरों की पहचान और डीप लर्निंग एल्गोरिदम जैसी आर्टिफिशयल इंटेलिजेंस तकनीकी पुरातात्विक अनुसंधान और सांस्कृतिक विरासत संरक्षण के लिए नए उपकरण प्रदान करती है। हालांकि ऐतिहासिक कलाकृतियों और व्यक्तित्वों के पुनर्निर्माण में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग प्रमाणिकता और हाशिए पर पड़ी आवाज और कक्षाओं के संभावित विलोपन के बारे में नैतिक प्रश्न उठाती है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

4. नैतिक विचार और भविष्य की दिशाएँ– जैसे–जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का सांस्कृतिक प्रभाव बढ़ता जा रहा है। नैतिक निहितार्थों को सम्बोधित करना और यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि तकनीकी प्रगति पूरे समाज को लाभान्वित करें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विकास में नैतिक विचारों में पूर्वाग्रह और निष्पक्षता, गोपनीयता और डाटा सुरक्षा और लाभ जोखिमों के न्यासंगत विवरण के मुद्दे शामिल हैं। इसके अलावा प्रौद्योगिकीविदों, नीति निर्माताओं और सांस्कृतिक चिकित्सकों के बीच अतःविषय संवाद और सहयोग को बढ़ावा देना आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सांस्कृतिक के जटिल अंतर्सम्बन्धों को नेविगेट करने के लिए महत्वपूर्ण है।

भविष्य को देखते हुए संस्कृति और पहचान पर (एआई) के सम्भावित नकारात्मक परिणामों को कम करने के लिए सक्रिय उपायों की आवश्यकता है। इसमें आर्टिफिशियल एल्गोरिदम में पारदर्शिता और जवाब देही को बढ़ावा देना है और उन पहलुओं का समर्थन करना शामिल है। जो समाज एवं समुदाय को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के आस–पास के सांस्कृतिक आख्यानों को सक्रिय रूप से आकार देने के लिए सशक्त बनाती है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. प्रस्तुत शोध पत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि शिक्षा जगत किस प्रकार AI के सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों से गुजर रहा है।
2. प्रस्तुत शोध पत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि AI के माध्यम से संस्कृति मूल्यों में आए बदलावों की प्रकृति कैसी है।
3. प्रस्तुत शोध पत्र में यह सुझाने का प्रयास किया गया है कि AI किस प्रकार मानव कल्याण की दिशा में योगदान दे सकती है।

अध्ययन की शोध प्रविधियां

प्रस्तुत शोध पत्र के अन्तर्गत शिक्षा एवं संस्कृति पर AI का प्रभाव की भूमिका का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। यह शोध पत्र सैद्धान्तिक विवरण और विश्लेषणात्मक अन्वेषण पर आधारित है। वर्णनात्मक शोध एक ऐसा शोध है, जिसका उद्देश्य विषय एवं समस्या के सम्बन्धों में यथार्थतः वास्तविक तथ्यों को एकत्रित करके उनके आधार पर एक विवरण प्रस्तुत किया है। वर्णनात्मक शोध (अनुसंधान) में विषय एवं समस्या के विभिन्न पक्षों पर सविस्तार प्रकाश डाला गया है। यहाँ पर मुख्य जोर इस बात पर दिया जाता है कि विषय से सम्बन्धित, एकत्रित किये गये तथ्य वास्तविक एवं विश्वसनीय हैं।

आँकड़ों का संकलन एवं प्रयुक्त विधियाँ– इस शोध पत्र में द्वितीय स्रोतों का प्रयोग किया गया है, द्वितीयक स्रोतों के रूप में **''शिक्षा एवं संस्कृति पर (एआई) का प्रभाव''** विषय से सम्बन्धित सरकारी, प्रतिवेदनो, सर्वेक्षणों के आंकड़ों तथा शोध विषय से सम्बन्धित सामग्री, जो विभिन्न पुस्तकों, आलेखो–प्रलेखों, शोध–रिपोर्ट एवं अखबारों, पत्र–पत्रिकाएं, इन्टरनेट, बेवसाइट एवं ग्रंथो में उपलब्ध थी, का प्रयोग किया गया है। शोध विषय से सम्बन्धित सूचनाएँ प्राप्त कर संकलित सूचनाओं को विश्लेषित किया गया है।

निष्कर्ष

प्रौद्योगिकी और संस्कृति के निरन्तर विकसित होते परिदृश्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में खड़ा है। जो सामाजिक मानदंडो और पहचानों को गहन तरीको से नया रूप दे रहा है, जैसे कि हम इस लेख में खोजे गए एआई के सांस्कृतिक प्रभावों पर विचार करते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रौद्योगिकी और संस्कृति का प्रतिच्छेदन केवल एक निष्क्रिय बातचीत नहीं है, बल्कि एक प्रगतिशील संवाद है, जो दोनों क्षेत्रों को प्रभावित और आकार देता है।

इस आर्टिकल में हमने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विषय में जितनी भी चर्चा की है, उससे पता चलता है कि समाज पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभाव गहरा और दूरगामी है। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा में सुधार और भारतीय शिक्षा में क्रान्ति लाने से लेकर परिवहन, कृषि, मानव संसाधन, कानून, मनोरंजन, स्मार्ट शहर और फाइनेंस के क्षेत्र में परिवर्तन तक एआई हमारे रोजमर्रा के कार्य करने, जिंदगी जीने और हमारे आस–पास की दुनिया के साथ बातचीत करने के तरीके बदल रहे हैं। इस नवीनतम तकनीकी की परिवर्तनकारी शक्ति में अपार सम्भावनाएँ हैं। फिर भी एआई में निहित चुनौतियों और नैतिक विचारों को सम्बोधित किया जाना चाहिए। एआई को अपनाकर और इसके गुण–दोषों को समझकर इसके विकास का मार्गदर्शन करके हम अधिक दक्षता के साथ मानवता से सम्बन्धित चुनौतियों को हल करने की दिशा में काम कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. सिकरवार, राघवेन्द्र सिंह (2022), ''शिक्षा के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)'' Vol. 05, Issue-4, ISSN: 2581-6918, संत योगी मान सिंह शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत, पृ.सं. 1171–1176
2. आर्य, डॉ. मोहन लाल (2021), ''शिक्षक–शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि : भूमिका एवं विकास'', Vol. XIII, Issue-VII, ISSN: No. 0022-1945, आई.एफ.टी.एम. विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत, पृ.सं. 1487–1491
3. सेठ, दीपिका (2023), ''शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका'', Vol. 11, Issue-9, (IJCRJ), ISSN: No. 2320-2882] लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, पृ.सं. D345-D349

4. सिंह, प्रो. गीता (2021), ''समकालीन भारतीय शिक्षा तथा संस्कृति का सम्बन्ध'', Vol. VIII, Issue-VI, (ERJ), ISSN: P-2455-0515] निर्देशक, सेंटर फॉर प्रोफेशनल डेवलपमेंट इन हायर एजुकेशन (सी.पी.डी.एच.ई.) यू.जी.सी. मानव संसाधन विकास केन्द्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ.सं. 135–139
5. सांखला, डायालाल (2022), ''बैंकिंग एवं वित्त क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस'', Vol. 1, Issue 14, (IJRAW), E-ISSN: 2583-1615, सहायक आचार्य, आर्थिक प्रशासन एवं वित्त प्रबन्ध एम0बी0सी0 राजकीय कन्या महाविद्यालय, बाडमेर, राजस्थान, भारत, पृ.सं. 70–72
6. डॉ. देवराज (2018), ''वैदिक शिक्षा प्रणाली का आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव'', (IJRAR), Vol. 5, Issue-3, E-ISSN: 2348-1269, सहायक आचार्य, संस्कृत अन्तर्राष्ट्रीय दूरवर्ती शिक्षा एवं मुक्त अध्ययन के हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला–5, पृ.सं. 91–94
7. मुखर्जी, मौसमी (2019), ''आधुनिकीकरण और शिक्षा'', रिव्यु ऑफ रिसर्च, यूसीसी एपरोविड जर्नल, Vol. 8, Issue-5, ISSN: 2249-894X, एमृ.एड. डिप्सर कॉलेज ऑफ ऐजुकेशन, देवधर, झारखण्ड, भारत, पृ.सं.1–4

''शिक्षा एवं संस्कृति पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का प्रभाव'' विषय पर आधारित शोध पत्र में इस्तेमाल होने वाली प्रमुख वेबसाइटों का विवरण–

8. https://hindi.careerindia.com/tips/the-rale-of-artificial-intelligence-in-education-system-006457.html?story-4
9. www.en.unesco.org/artificial.intelligence/education.
10. https://computerhindiotes.com/whatis-artificial-intelligence.
11. www.timesofindia.indiatimes.com
12. https://www.drishtiias.com/hindi/printdf/artificial.intelligence.
13. https://www.franchiseindia.com
14. https://bhartiya.news.
15. https://www.patrika.com
16. https://www.jagran.com
17. https://liverageedu.com
18. wwww.teachthought.com